

1.400

किं पुत्रयुक्ता कृष्णनयविद्या ॥ चतुर्गुणमपीतवसुदानं दानार्थं वा क्र
लानददत्त ॥ गायत्री मंत्रं लक्ष्म्य ॥ ॥ श्रुत्यादि ॥ यत्तु मानस्य यथा
उच्चार्य कृत्वा किं वृत्तस्य निदवना सुधीत्यर्थं श्रुमूकनामममलः
वाक्कलाय श्रुमूककाम ॥ मीयुगमपीतवसुदानं दुःखमहं संपदद ॥
अननदानं नरुगवान् वृत्तस्य निदवना सुधीता वनदारुवंतु ॥ वि
द्या ॥ वाक्कलानस्य सि ॥ लंकादादित्यादि ॥ लंका दं कामयन सा मे काम ॥

समस्तगालं खनय्या ॥ वाहिविद्या ॥ चतुर्गुणवव्रीहिपार्श्वं दुःखमहं सं
पदद ॥ लंका दं दक्षिणा ॥ कर्तेतु नयुगमपीतवसुदानं यनिष्ठार्थं सुवर्णः
दक्षिणा संपदद ॥ आर्णावोद ॥ लंका वृत्तस्य ॥ पुनवाणीवदि ॥ निष्ठा
वविद्या ॥ लंका वृत्तस्य नयत्यादि ॥ यथा दीयमानां दमनस कल्प सिद्धि
नमु ॥ ॥ दक्षिणा ॥ पीनियस्य पुनादन न निखिदि वृत्तं यवानं
वलि दं ॥ दं ॥ सिंधुस रज्जुलाहनय ॥ गवसुवदयं सदा ॥ सोमं पं

कञ्जकाण्डांगवत्तुवकाविदवदियं होविपदवृहस्यनमस्व
 मुखेनोमिसदाहं गुनं ॥ ॥ अरुगन्धदि ॥ ॥ शुक्रया ॥ वाक्कलपु
 जा ॥ शुक्राय ॥ काय ॥ गवीन्दपत्यविदवगाय ॥ दमासनं नमः
 श्यं नमः ॥ अवहसाद्यं नमः ॥ ॥ धनवन्दनं नमः ॥ ॥ धनयज्ञाय
 वीर्यं नमः ॥ ॥ धनपूर्यं नमः ॥ ॥ धूपं नमः ॥ दीपं नमः ॥ अरुगन्धदि
 ॥ वीहिसपूजनं ॥ ॥ ३ ॥ ॥ शुक्राय नमः ॥ ॥ काय नमः ॥ ॥ गवीन्द

वदवगाय नमः ॥ काण्डांगमन्त्रकायाव लंखदायकं नया ॥ दानवाक्
 कुं विष्णुं मस्रुयं नयमादमृगं रुतं वाचदाकं वाहनानिर्हं न
 गङ्गा किं प्रयत्नमः ॥ काण्डांगवदियं ॥ ॥ धनं अथ दानं दानं वाक्कल
 नददस्य ॥ गायत्री नमः ॥ अथादि ॥ यजमानस्य यथा उच्चार्य कृत्वा गति
 शुक्रदवगाय मयीत्यर्थं अमृकनामं गम्यते वाक्कलपु अमृककामः ॥
 मां अथ दानं रुतं ॥ ॥ धनं दानं नमः ॥ गवानं शुक्रदवगा

१२० नो अरया शा नि ॥ ॥ य नो

अरवार कुकु लाम ल देक
ने कुया वरना न थम नया
या लाम ल दे नो के उा लना
दाना विदे न्या या शाने अर
या म नि नि म ने ला शु लना
वे का व द य के उा या या

य शाने अर या म नि नि का

के क म या व प जग

उ उ सि दाना वि दया के

का पो दे ल उ लना न

जो का श का थ ल लना न

न र या न उ उ उ न थ प नो लना म

म वि च च रि ने वे द्या दा न ल उ

सा लाम ल न्या थ पा द म प नु

न सि दया ॥ शाने अर या म नि नि म

म प वे क न म न या न थ नो ॥ म च
न न अर न म नो ल नो ल नो ल नो

न नो ॥ म म नो ल नो ल नो ल नो

सुखीना वनदाहर्वृत्तु ॥ विय ॥ वाक्कलनसुखि ॥ कुंकादागुह्यादि ॥ ॥
कुंन्दकामयन ॥ सामेकाम ॥ समृद्धन ॥ लखनहाय ॥ वीहिविया ॥ जग
वनकवीदि पार्तुदुखमहं सं प्रदद ॥ लददित्ता ॥ हनेमनसुखदानः
पुतिष्ठार्थ ॥ सुवल्गुददित्ता ॥ दुखं महं सं प्रदद ॥ आशीर्वादि ॥ कुंश्रुनाः
या ॥ पूननाशीर्वादि ॥ निष्ठावविया ॥ कुंश्रुकायत्यादि ॥ यथा दीयमाः
नारुदमन्नसंकल्पसिद्धिप्रभु ॥ ददित्ता ॥ साह ॥ ॥ यथा वल्गुरुदाह

कानि नवमीदर्यं दृगान्नं वलिंद ॥ लहागवनसजागनवमीखल्लानधू
पंदहगा ॥ दानं वा ॥ मरुमसकृन्दि ॥ कुकुसुमाधिकाधिपवदामुलि
नपूवर्मिलुलगनपुत्याधिपद्यायली ॥ अरुगन्धदि ॥ ॥ लनेश्वनया
वाक्कलयूजा ॥ लनेश्वनाय ॥ यमाय ॥ पुजापत्यविदवनाय ॥ नृदमासनं
नपूष्यं नमः ॥ चर्वहस्तार्थं नमः ॥ हनिनचन्दनं नमः ॥ यक्षापवीर्ण
नमः ॥ यूप्यं नमः ॥ धूपं नमः ॥ दीपं नमः ॥ अरुगन्धदि ॥ वीहिसपू